

रॉबर्ट वैनॉय, प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 3

यशायाह 2:1-4 को उत्तर सहस्राब्दी और सहस्राब्दी परिप्रेक्ष्य से खोजना

यशायाह 2:1-4 सहस्राब्दी के बाद के परिप्रेक्ष्य से [अलेक्जेंडर]

तीन व्याख्यात्मक युगांतशास्त्रीय स्थितियाँ हैं: प्रीमिलेनिअल, अमिलेनिअल और पोस्टमिलेनिअल स्थितियाँ। आइए मैं आपको एक अंदाज़ा दूँ कि पोस्ट-मिल्स पैसेज के साथ कैसे काम करते हैं। मैं जेए अलेक्जेंडर का उपयोग करके ऐसा करूँगा। मैं उल्लेख कर सकता हूँ, यशायाह पर उनकी टिप्पणी एक बहुत ही उपयोगी टिप्पणी है। वह कई अन्य स्रोतों का हवाला देता है, और वह मूल ग्रंथों में जाता है। वहाँ बहुत सारी उपयोगी सामग्री है। जब आप यशायाह के उन खंडों पर आते हैं जिनका युगांतशास्त्रीय पहलू है, तो वह पोस्ट-मिलिट्री परिप्रेक्ष्य से ऐसा करता है।

चर्च का उत्थान

अपने उद्धरणों में क्रमांक 2 देखें। मैंने अभी-अभी विभिन्न छंदों पर कुछ अंश उठाए हैं। पहले पैराग्राफ पर ध्यान दें: "पहले भाग में, भविष्यवक्ता अध्याय 2-4 में चर्च के भविष्य के उत्थान और अन्यजातियों के शामिल होने की भविष्यवाणी करता है।" तो आप देखिए, वह पूरी भविष्यवाणी को चर्च के भविष्य के उत्थान के रूप में देखता है। यह शब्द कि "प्रभु के मन्दिर का पर्वत पहाड़ियों के ऊपर उठाए गए पर्वत के शिखर के रूप में स्थापित किया जाएगा," - वह यरूशलेम है। वह चर्च का प्रतीक है। "सभी राष्ट्र इसकी ओर प्रवाहित होंगे," यही गैर-यहूदी चर्च में आ रहे हैं। वह आगे कहते हैं, "अध्याय 1:1 के समान शीर्षक के बाद कुछ सुदूर काल में चर्च की भविष्यवाणियाँ उत्कृष्ट और विशिष्ट होंगी और राष्ट्र निर्देश और सच्चे धर्म के लिए इसका सहारा लेंगे।" जिसके परिणामस्वरूप वह देखता है कि युद्ध समाप्त हो गया है और सार्वभौमिक शांति कायम हो गई है - छंद 2-4। तो आप देखिए, जैसे-जैसे सुसमाचार आगे बढ़ता है और सभी राष्ट्रों के लोग मसीह के पास आते हैं, अंतिम परिणाम युद्ध की समाप्ति और सार्वभौमिक शांति की स्थापना होगी।

यशायाह, अध्याय 2, पद 2 के बारे में वह कहते हैं, “भविष्यवाणी चर्च के उत्थान की अचानक भविष्यवाणी से शुरू होती है। इसमें राष्ट्रों का संगम और परिणाम का सामान्य वर्गीकरण, श्लोक 2-4। यह कहने के बजाय, आधुनिक वाक्यांशविज्ञान में, कि चर्च एक ऐसा समाज है जो विशिष्ट बनेगा और सभी देशों को आकर्षित करेगा, वह इसका प्रतिनिधित्व उस पहाड़ से करता है जिस पर मंदिर खड़ा था, जिसे अन्य पहाड़ों से ऊपर उठाया और स्थापित किया गया था ताकि यह सभी में दिखाई दे सके। दिशानिर्देश।” वह कहते हैं, “यह प्रतीकात्मक भाषा है जो चर्च पर फिट बैठती है।” वह पृष्ठ 97 पर है। मैं उसका उल्लेख कर सकता हूँ, कि उनकी टिप्पणी में पहला वाक्य पृष्ठ 95 है और दूसरा पैराग्राफ 96 है। “राष्ट्रों के इस संगम को और अधिक पूरी तरह से वर्णित किया गया है और इसके उद्देश्यों को उनके अपने शब्दों में बताया गया है, अर्थात् सच्चे धर्म में शिक्षा पाने की इच्छा जिसके लिए पुरानी व्यवस्था के तहत यरूशलेम, या सिय्योन, एकमात्र जमाकर्ता था।” वह पृष्ठ 98 है। “क्योंकि व्यवस्था सिय्योन से निकलेगी” कर्तव्य के नियम और यहोवा के वचन के रूप में सच्चा धर्म है; सच्चा धर्म यरूशलेम-चर्च से प्रकट होता है।

सुसमाचार का प्रसार शांति लाता है

श्लोक 4 वास्तव में परिच्छेद का सार है। यहीं पर, “तलवारों को पीट-पीटकर हल के फाल बनाया जाएगा; न ही उन्हें अब युद्ध सीखना चाहिए। वह कहते हैं, “यहां जो पूर्ववर्ती छंदों में राष्ट्रों के कानून-प्रदाता और शिक्षक के रूप में प्रकट होता था, उसे अब मध्यस्थ या अंपायर के रूप में दर्शाया जाता है, जो विशिष्ट हस्तक्षेप के माध्यम से अपने विवादों को समाप्त करता है, जिसके आवश्यक परिणाम के रूप में युद्ध बंद हो जाता है। कला का ज्ञान ही लुप्त हो गया है और इसके उपकरणों को अन्य उपयोगों में लागू किया जाता है। यह भविष्यवाणी सम्राट ऑगस्टस के अधीन सामान्य शांति में पूरी नहीं हुई, जो केवल अस्थायी थी। न ही अब यह पूरा हुआ है। आयोजन को पिछली शर्त पर निलंबित कर दिया गया है, अर्थात्, राष्ट्रों का चर्च में संगम, जो नहीं हुआ है। यह सुसमाचार को फैलाने के लिए एक मजबूत प्रेरणा है, जो इस बीच शांतिपूर्ण है, और आत्मा में वास्तविक प्रभाव में, जहां भी, [और ध्यान दें], जहां तक यह बिना किसी बाधा के अपना प्रभाव डालता है। और वह राष्ट्रों के बीच न्याय या मध्यस्थता करेगा, और बहुत सी जातियों का निर्णय

करेगा, और वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे; राष्ट्र अन्यजातियों पर तलवार न चलाएंगे, न वे फिर युद्ध सीखेंगे।"

देखिए, वह जो कह रहा है वह सुसमाचार के प्रसार के माध्यम से होना है, हम अभी तक सड़क पर काफी आगे नहीं पहुंचे हैं। बेशक, वह लगभग एक सदी पहले लिख रहे थे। लेकिन, युद्ध समाप्ति के इन परिणामों को देखने के मामले में हम अब उतने करीब नहीं हैं जितने तब थे। लेकिन वह पोस्टमिल व्याख्या है। यह सुसमाचार फैलाने की प्रेरणा है क्योंकि सुसमाचार के प्रसार के माध्यम से मनुष्यों के दिलों में पुनर्जन्म के परिणामस्वरूप ये स्थितियाँ आएंगी। यह पोस्टमिल व्याख्या से अलेक्जेंडर का प्रतिनिधित्व है।

उस स्थिति का एक और उदाहरण केइल और डेलित्ज़स्च टिप्पणी का डेलित्ज़स्च है। आपके उद्धरणों का पृष्ठ 5। श्लोक 3 में, डेलित्ज़ का कहना है कि यह पृष्ठ 116 पर है: "यह पूरा हुआ जैसा कि थियोडोरेट ने इस तथ्य में देखा कि सुसमाचार का शब्द यरूशलेम से उठता है, जैसे कि एक फव्वारा से, पूरे ज्ञात दुनिया में बह गया। लेकिन ये पूर्तियाँ केवल एक निष्कर्ष की प्रस्तावना थीं, जिसे भविष्य में निम्नलिखित छंदों में वादा किया गया है जो अभी भी अधूरा है।

फिर पद 4, जो पृष्ठ 116 और 117 पर है: "और वह राष्ट्रों के बीच न्याय करेगा और बहुत से लोगों को न्याय देगा क्योंकि वे अपनी तलवारों को हल के फाल और भालों को कांटों में बदलने की आशा रखते हैं; राष्ट्र राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठाएंगे और न ही वे अब युद्ध में भाग लेंगे। ऐसी शक्ति के साथ भगवान का यह शांति-स्थायी शब्द है। अब लोहे के हथियारों की जरूरत नहीं रही। उन्हें शांतिपूर्ण रोज़गार के हथियार में बदल दिया गया है। अब सैन्य अभ्यास की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जिस चीज़ को उपयोगी नहीं माना जा सकता, उसमें स्वयं को प्रशिक्षित करने से कोई लाभ नहीं है। शांति है: सशस्त्र शांति नहीं, बल्कि पूर्ण, सच्ची, ईश्वर प्रदत्त और धन्य शांति। युद्ध में ही जानवर की शक्ति दुनिया के इतिहास में चरम पर पहुंचती है। तब जानवर नष्ट हो जाएगा। सच्ची मानवता अपने चुने हुए को ऊपर भेजेगी और प्रभुत्व हासिल करेगी। संसार सब्त का दिन मानेगा।"

उनके अगले बयान पर गौर करें. "क्या हम इन भविष्यसूचक शब्दों के आधार पर यह आशा नहीं रख सकते कि दुनिया का इतिहास सब्त का पालन किए बिना समाप्त नहीं होगा?

केंसेट के अनुसार, क्या हमें यशायाह को सही करना चाहिए, ऐसा न हो कि हमें चिलियास्ट बन जाना चाहिए, [अर्थात् प्रीमेलेनियलिस्ट, वे लोग जो भविष्य के सहस्राब्दी काल को देखते हैं]? विचारशील यहूदी विद्वान का कहना है, 'ईसाईजगत के मानवतावादी विचारों की जड़ें पेंटाटेच और उससे भी अधिक व्यवस्थाविवरण में हैं; लेकिन भविष्यवक्ताओं में, विशेष रूप से यशायाह में, ऐसी ऊंचाई तक पहुंचते हैं जो आने वाली सदियों तक आधुनिक दुनिया द्वारा प्राप्त और पूरी तरह से महसूस नहीं किया जाएगा।" फिर डेलित्ज़ कहते हैं, "फिर भी वे [भविष्यवाणी के शब्द] साकार होंगे। यशायाह द्वारा यहां बताए गए भविष्यसूचक शब्द नैतिक रुख की पुष्टि करते हैं, पवित्र इतिहास का लक्ष्य जिसने ईश्वर की सलाह की भविष्यवाणी की थी। तो सहस्राब्दी के बाद का दृष्टिकोण इस भविष्यवाणी को हमें यह बताने के रूप में देखता है कि चर्च और पृथ्वी के छोर तक सुसमाचार के प्रसार के माध्यम से, अंततः ऐसी स्थितियाँ निर्मित होंगी जिसमें युद्ध समाप्त हो जाएगा।

यशायाह 2:1-4 एक सहस्त्रवर्षीय परिप्रेक्ष्य से [युवा]

ठीक है, यह इसकी सहस्राब्दी के बाद की समझ है। आइए एक सहस्त्रवर्षीय समझ पर वापस जाएं। मैंने "अंतिम दिनों" के बारे में यंग के दृष्टिकोण और जिस तरह से वह इस भविष्यवाणी को "अंतिम दिनों" में फिट बैठता हुआ देखता है, उस पर चर्चा करते हुए इसे छुआ है। लेकिन पृष्ठ 8 को देखें। जिस उद्धरण को हमने नहीं देखा है, वह पृष्ठ के ठीक मध्य में है; यह यशायाह पर यंग की टिप्पणी के पृष्ठ 101 और 102 से आता है जहां यह कहता है, "इस चित्र के माध्यम से, यशायाह सच्चाई सिखाना चाहता है कि भगवान की पूजा अलंकार द्वारा व्यक्त की जाती है, 'भगवान के घर का पहाड़' के रूप में।" [तो आप देख सकते हैं कि आप आलंकारिक भाषा में हैं।] तब भगवान की पूजा, जिसे 'भगवान के घर का पर्वत' के रूप में रूपक द्वारा व्यक्त किया गया है, अन्य सभी धर्मों और पूजा के रूपों पर विजय प्राप्त करेगी। जिस स्थान पर भगवान की पूजा की श्रेष्ठता प्रकट होती है वह इज़राइल के बाहर की मान्यता है। यशायाह के दिनों में, यह पूजा तुलनात्मक रूप से अस्पष्ट थी और व्यावहारिक रूप से इज़राइल तक ही सीमित थी। राष्ट्र प्रभु को केवल इस्राएल के परमेश्वर के रूप में मानते थे, मोआबियों के कमोश की तरह एक स्थानीय देवता। हालाँकि, बाद के

दिनों में सिंथोन जितना ऊँचा होगा, इज़राइल का यह धर्म दुनिया भर में जाना जाएगा। नए नियम के प्रकाश में, हम कह सकते हैं कि इस भविष्यवाणी का संदर्भ उस चर्च से है जिसकी स्थापना यीशु मसीह ने यरूशलेम से शुरू करके की थी। शिष्य सच्चे उद्धार का प्रचार करते हुए दुनिया भर में गए। यह चर्च सत्य के स्तंभ और आधार के रूप में हर प्राणी के लिए प्रचारित किया जाना है। तो उस बिंदु पर आपके पास पोस्टमिलेनियलिस्टों के बीच एक समझौता है। और चर्च की भूमिका और सुसमाचार के प्रसार के बारे में एमिलीनियलिस्ट। वह ईजे यंग है।

वहाँ साथ चलो; यह पृष्ठ 102 से आता है। 12 एक फुटनोट है, "कई आधुनिक लेखकों द्वारा इस अनुच्छेद को मसीह की वापसी के बाद सहस्राब्दी के दौरान पूरा होने के लिए कहा गया है। जवाब में।" [उसका उत्तर सुनें।] "हमें ध्यान देना चाहिए कि यह भविष्यवाणी बाद के दिनों के लिए जिम्मेदार है, जो मसीहाई दिन हैं।" क्योंकि यह "अंतिम दिन" हैं, यह सहस्राब्दि नहीं हो सकता। "इसके अलावा, लिया गया आशीर्वाद आध्यात्मिक है। मनुष्य प्रभु की खोज करेंगे ताकि वे उसके मार्गों पर चल सकें। परन्तु मनुष्य प्रभु को तभी स्वीकार करते हैं जब प्रभु उन्हें ऐसा करने के लिए आकर्षित करते हैं। यह सुसमाचार के प्रचार के संबंध में पवित्र आत्मा का कार्य है।

फिर अगले पैराग्राफ पर ध्यान दें, जो यंग के पृष्ठ 103 से आता है: "अब केवल एक राष्ट्र ही प्रभु को नहीं जानता, बल्कि सभी राष्ट्र उसे जानते हैं। जब यशायाह कहता है, 'बहुत से लोग,' तो उसका मतलब सभी लोगों से नहीं, बल्कि बस एक बड़ी भीड़ से है। जो लोग पहले अजनबी और विदेशी थे, वे अब संतों के साथी नागरिक हैं। पुराने नियम की व्यवस्था के दौरान, सुसमाचार की महिमा राष्ट्रों के साथ छिपी हुई थी। हालाँकि, बाद के दिनों में, चर्च खड़ा हो जाएगा, और सभी राष्ट्रों के लोग इसमें आएंगे। लोग अब बिखरे हुए राष्ट्र हैं जो प्रभु के पास लौट रहे हैं और वे एक हो जायेंगे। सभी राष्ट्र सिंथोन की ओर प्रवाहित होंगे। किसी भी राष्ट्र को बाहर नहीं रखा जाएगा। इन सब राष्ट्रों में बहुत से लोग होंगे। सिंथोन सत्य का केंद्र है। यदि कोई व्यक्ति सत्य सुनना चाहता है, तो उसे उस स्थान पर जाना चाहिए जहाँ सत्य पाया जाता है, अर्थात्, जीवित ईश्वर का चर्च जहाँ से ईश्वर का सत्य प्रवाहित होता है।

फिर अगला पैराग्राफ. यह अमिल स्थिति के मूल में वापस जाता है। वह कहते हैं, "इस टिप्पणी में दी गई व्याख्या के दो प्रचलित प्रकार के उत्तर हैं: एक ओर वे लोग हैं जो कहते हैं कि

यह संभव है, कि ईसा मसीह की वापसी से पहले के युग में युद्ध पूरी तरह से बंद हो सकता है।" स्वर्ग [यह एक पोस्टमिल स्थिति होगी।] दूसरी ओर, ऐसे लोग हैं जिन्हें डिस्पेंसेशनलिस्ट के रूप में जाना जाता है, जो मानते हैं कि भविष्यवाणी वर्तमान युग में पूरी नहीं हुई है, बल्कि सहस्राब्दी में पूरी होगी जो ईसा मसीह की वापसी के बाद होगी।

उस दृश्य के बारे में उनकी टिप्पणी पर ध्यान दें। "इस बाद वाली प्रकार की व्याख्या गंभीर प्रकार की हिंसा करती है। [किससे?] बाइबिल युगांतशास्त्र की सामान्य संरचना के लिए।" दूसरे शब्दों में, यहां उनका तर्क "सिस्टम हिंसा करता है" की संरचना में अधिक है। हम इन दोनों स्थितियों का उत्तर इस प्रकार दे सकते हैं।" तो अब यहाँ वह पोस्टमिल व्याख्या या प्रीमिल व्याख्या के विरुद्ध है: "हम इन दोनों स्थितियों को निम्नानुसार दर्ज कर सकते हैं। जहाँ तक मनुष्य प्रभु के बारे में सीखते हैं और उनसे सीखे जाते हैं, वे उनकी सरकार के सिद्धांतों को अपने जीवन में लागू करने का प्रयास करेंगे। आप देखते हैं, योग्यता "जहाँ तक मनुष्य भगवान के बारे में सीखते हैं और उनकी सरकार के सिद्धांतों को लागू करने की कोशिश करते हैं।" नतीजतन, वर्तमान समय में भी, [और यहां योग्यता है], जहां तक लोग सुसमाचार पर विश्वास करते हैं और इसे अपने जीवन में अभ्यास करना चाहते हैं, यह भविष्यवाणी पूरी होती है। साथ ही यह याद रखना चाहिए कि पाप अभी भी मौजूद है, और जब तक प्रभु के दूसरे आगमन में पाप पूरी तरह से दूर नहीं हो जाता तब तक यह भविष्यवाणी पूरी तरह से साकार नहीं होगी। जबकि इसलिए बाद के दिन प्रभु के दूसरे आगमन तक जारी रहते हैं, इन अंतिम दिनों द्वारा शुरू की गई धन्य स्थितियाँ हमेशा बनी रहेंगी। इस भविष्यवाणी को युगांतशास्त्र की सामान्य संरचना के सामान्य प्रकाश में ही समझा जाएगा।

आप देखते हैं कि वह ठीक उसी चीज़ पर वापस आ गया है जो उसी पृष्ठ के अंतिम पैराग्राफ में है, जो वास्तव में पाठ में उस पैराग्राफ के लिए एक फुटनोट है। "यह सिद्धांत रूप में पूरी तरह से पूरा हो गया है, लेकिन केवल सिद्धांत रूप में। यह तब तक पूरा होता है जब तक मनुष्य स्वयं को प्रभु के प्रति समर्पित कर देते हैं और प्रभु के प्रति आज्ञाकारिता करते हैं कि शांति की ये स्थितियाँ साकार हो जाती हैं। संपूर्णता में, वे कहते हैं, यह बाद के दिनों में नहीं है। वह इसे शाश्वत अवस्था में धकेल रहा है।

"तलवारों को पीटकर हल के फाल में बदलना" से जो समझा जा रहा है उसके आध्यात्मिकीकरण की डिग्री क्या है? क्या आप यह कहने जा रहे हैं कि वास्तव में इसका मतलब यह नहीं है कि युद्ध बंद होने जा रहे हैं, बल्कि यह मनुष्य के दिल में शांति है? युवा इतनी दूर तक नहीं जाता. कुछ आमिल दुभाषिए हैं जो ऐसा करते हैं। यंग उस समस्या को हल करके उसे हल कर लेता है। हम इस शांति को उस हद तक देखेंगे जब मनुष्य स्वयं को प्रभु की इच्छा के अधीन समर्पित कर देंगे; लेकिन क्योंकि पाप अभी भी मौजूद है, यह कभी भी पूर्ण नहीं होगा। ताकि प्रतिस्पर्धा की पूर्ति को अंतिम दिनों से आगे बढ़कर शाश्वत अवस्था में जाना पड़े। जैसा कि वह कहते हैं, इसमें कठिनाइयाँ हैं। हम बस इतना कर सकते हैं कि युगांतशास्त्र की संरचना के प्रति वफादार रहें। तो ये उसका सिस्टम ही है जो उसे इस दिशा में मजबूर कर रहा है.

वर्नाय की प्रीमिलेनियल प्रतिक्रिया

मुझे दृश्य के साथ वास्तविक समस्या है। मुझे नहीं लगता कि यह पाठ की भाषा के साथ न्याय करता है। जब आयत 4 में कहा गया है, "वह राष्ट्रों के बीच न्याय करेगा और बहुत से लोगों के झगड़ों का निपटारा करेगा। वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल, और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे; राष्ट्र राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठाएगा," वहां कोई योग्यता नहीं है। यह किसी आंशिक रूप से पूर्ण होने, या सिद्धांत रूप में पूर्ण होने, बल्कि बाद में पूर्ण रूप से पूर्ण होने की बात नहीं है। वह वर्णन कर रहा है कि क्या होने वाला है जब लोग सियोन से आने वाले प्रभु के कानून को प्राप्त करते हैं, और वह राष्ट्रों का न्याय करता है और शासन करता है।

केल्विन का सहस्राब्दी परिप्रेक्ष्य

आइए पेज 3 और 4 पर केल्विन को देखें। मैं यह सब केल्विन से नहीं पढ़ने जा रहा हूँ। दूसरा अनुच्छेद: "वे अपनी तलवारों को पीट-पीट कर हल के फाल बना देंगे।" केल्विन का भी मानना है कि यह चर्च के बारे में बात कर रहा है जैसा कि यंग करता है। लेकिन वह कहते हैं, "वह [यशायाह] आगे उस लाभकारी परिणाम का उल्लेख करता है जो तब होगा जब मसीह अन्यजातियों और राष्ट्रों को अपने प्रभुत्व के अधीन लाएगा। शांति से अधिक वांछनीय कुछ भी नहीं

है, लेकिन जबकि सभी कल्पना करते हैं कि वे इसकी इच्छा रखते हैं, वे अपनी वासना के पागलपन से इसे परेशान करते हैं। क्योंकि अभिमान और लोलुप महत्वाकांक्षा मनुष्यों को एक दूसरे के विरुद्ध क्रूरता करने के लिए प्रेरित करती है। चूँकि, इसलिए, मनुष्य स्वाभाविक रूप से समाज की सेवा करने के अपने बुरे जुनून से दूर हो जाते हैं, यशायाह यहाँ इस बुराई को सुधारने का वादा करता है - सुलह का सुसमाचार। 2 कुरिन्थियों 5:18 हमारे और परमेश्वर के बीच की शत्रुता को दूर करता है, इसलिए यह मनुष्यों को एक दूसरे के साथ शांति और सद्भाव में लाता है। इसका अर्थ यह है: कि मसीह के लोग नम्र होंगे, और उग्रता को छोड़कर, शांति की खोज के लिए समर्पित होंगे। उस पृष्ठ पर अंतिम पैराग्राफ. "इसके अलावा, यशायाह ने वादा किया है कि जब सुसमाचार प्रकाशित किया जाएगा, तो यह झगड़े को खत्म करने के लिए एक उत्कृष्ट उपाय होगा।"

आप चाह सकते हैं कि ऐसा होता। आपको यह पता लगाने के लिए बहुत सारे चर्चों को देखने की ज़रूरत नहीं है कि वे बहुत अच्छी तरह से काम नहीं कर रहे हैं। निःसंदेह, जिस तरह से ये लोग उस पर प्रतिक्रिया देंगे वह यह होगा: "ठीक है, लोग वास्तव में प्रभु के प्रति समर्पण नहीं कर रहे हैं और उनकी इच्छा का पालन नहीं कर रहे हैं, अन्यथा यह झगड़ा नहीं होता।" यह सच हो सकता है। लेकिन क्या यह भविष्यवाणी इसी बारे में बात कर रही है? केल्विन के साथ आगे कहते हुए, "यह झगड़ों को खत्म करने का एक उत्कृष्ट उपाय होगा, और न केवल ऐसा, बल्कि जब नाराजगी को एक तरफ रख दिया जाएगा, तो लोग एक-दूसरे की सहायता करने के लिए तत्पर होंगे। क्योंकि वह केवल यह नहीं कहता कि 'तलवारें टुकड़े-टुकड़े कर दी जाएंगी,' बल्कि वे हथकड़ी में बदल दी जाएंगी। जिससे वह दिखाता है कि इतना बड़ा बदलाव आएगा कि एक-दूसरे को परेशान करने, पहले की तरह विभिन्न अन्यायपूर्ण कार्य करने के बजाय, वे शांति और मित्रता विकसित करेंगे और सभी के सामान्य लाभ के लिए अपने प्रयासों को नियोजित करेंगे।

अगले पैराग्राफ तक, "'वे अब युद्ध का अभ्यास भी नहीं करेंगे।' [हिब्रू] शब्द लामाड का अर्थ या तो 'अभ्यस्त होना' या 'सीखना' है, लेकिन पैगंबर का अर्थ काफी स्पष्ट है। वे खुद को विनाशकारी कलाओं में प्रशिक्षित नहीं करेंगे और क्रूरता और अन्याय के कार्यों में एक-दूसरे के साथ प्रयास नहीं करेंगे जैसा कि वे पहले करने के आदी थे। इसलिए हम अनुमान लगाते हैं कि

उन्होंने" - इस वाक्य पर ध्यान दें - " सुसमाचार में बहुत कम दक्षता हासिल की है जिनके दिल नम्रता के लिए नहीं बने हैं और जिनके बीच भाईचारे का प्यार राज नहीं करता है जो पुरुषों को एक-दूसरे के प्रति दयालु कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

अब, अगला पैराग्राफ, और यह दिलचस्प है कि केल्विन इसे सामने लाता है, क्योंकि उसने अब तक जो कहा है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि यदि आप ईसाई हैं और आप प्रभु के अनुयायी होंगे, तो आपको शांतिवादी होना होगा। केल्विन को इसकी जानकारी थी। उनके अगले पैराग्राफ पर ध्यान दें: "कुछ पागल लोग अराजकता को बढ़ावा देने के लिए इस मार्ग पर अत्याचार करते हैं। मानो इसने चर्च से तलवार का उपयोग करने का अधिकार पूरी तरह से छीन लिया, और इसे हर तरह के युद्ध की बड़ी असमानता के साथ निंदा करने के लिए आगे लाया। उदाहरण के लिए, यदि कोई राजकुमार अन्याय से बचाने के लिए उसे सौंपे गए लोगों की रक्षा करता है, तो इन लोगों के लिए ईसाइयों के लिए तलवार का उपयोग करना गैरकानूनी है। लेकिन इसका जवाब देना आसान है. क्योंकि भविष्यवक्ता मसीह के राज्य के बारे में लाक्षणिक रूप से बोलता है।" दूसरे शब्दों में, यह आलंकारिक भाषा है, जिसका शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जाना चाहिए। "वह मसीह के राज्य के बारे में लाक्षणिक रूप से बोलता है, जो लोगों को पारस्परिक दयालुता के माध्यम से एक-दूसरे के साथ मेल-मिलाप की ओर ले जाता है।" वह जो कह रहा है वह यह है कि यहां जिस बारे में बात की जा रही है वह वास्तविक युद्ध नहीं है - जब हम युद्ध के बारे में बात करते हैं तो हम आम तौर पर क्या सोचते हैं। यह विश्वासियों के बीच संबंधों का मामला है। धर्मग्रंथ अक्सर एक रूपक का उपयोग करते हैं जिसमें जिस चीज़ का संकेत दिया गया है वह वह मामला है जिसे सौंपा गया है, जैसा कि उस मार्ग में है: "जिसके पास तलवार नहीं है, वह एक खरीद ले।" ईसा मसीह का निश्चित रूप से अपने अनुयायियों को लड़ने के लिए प्रेरित करने का इरादा नहीं था, लेकिन उन्होंने सूचित किया कि युद्ध का समय निकट आ गया है।

अंतिम पैराग्राफ देखें: "इस पर आपत्ति की जा सकती है कि सद्भाव और शांति की स्थिति में तलवार की आवश्यकता नहीं रह जाएगी। मैं जवाब देता हूं कि शांति मौजूद है," और यहां वह बिल्कुल यंग की तरह लगता है और वास्तव में, यंग ने शायद इसे केल्विन से लिया है। "मैं जवाब देता हूं कि हमारे बीच शांति तभी तक मौजूद है जब तक मसीह की राजसी शक्ति को स्वीकार

किया जाता है, और इन दोनों चीजों का परस्पर संबंध है। काश कि मसीह पूरी तरह से हम पर शासन करता, लेकिन वह ऐसा नहीं करता। इसलिए हमारे पास अभी भी ये समस्याएं हैं।"

और फिर अंतिम, चौथी पंक्ति, उस अनुच्छेद का अंतिम भाग। "इस भविष्यवाणी की पूर्ण सीमा तक पूर्ति की आशा पृथ्वी पर नहीं की जानी चाहिए।" वह इसे फिर से धक्का देता है. "यह पर्याप्त है कि हम शुरुआत का अनुभव करें। मसीह के माध्यम से ईश्वर के साथ मेल-मिलाप होना आपसी मित्रता में सामंजस्य लाना है।"

इस सब में अमिलेनियालिस्ट के लिए बाद के दिनों की समस्या पर ध्यान दें। वह बाद के दिनों को आगमन के बीच के समय के रूप में लेता है। उसे यह देखने में बहुत कठिनाई होती है कि इस भविष्यवाणी के शब्द वर्तमान में कितनी सटीकता से पूरे होते हैं। इसलिए उन्हें इस सिद्धांत या किसी प्रकार की योग्य पूर्ति का सहारा लेना होगा।

लाएत्स का सहस्त्राब्दी परिप्रेक्ष्य

मैं आपको एक अन्य एमिलेनियलिस्ट के बारे में बताता हूँ। मैं इसे कुछ हद तक अलग दृष्टिकोण के उदाहरण के रूप में करता हूँ। वह थियोडोर लाएत्स है, और वह पृष्ठ 6 पर है। लाएत्स एक लूथरन, एक मिसौरी धर्मसभा लूथरन है, लेकिन एक एमिलेनियलिस्ट भी है। उनकी टिप्पणी छोटे पैगम्बरों पर है, और लाएत्स के पृष्ठ 6 पर यह पैराग्राफ मीका समानांतर अनुच्छेद पर उनकी टिप्पणियों से लिया गया है कि "तलवारों को पीट-पीटकर हल के फाल बनाए जाएंगे।" यह मीका से है, लेकिन यह वही मुद्दा है। "मीका स्वयं दुनिया के देशों के बीच राजनीतिक शांति की बात नहीं करता है, वह यहां निश्चित रूप से ईश्वर के अनुग्रह के राज्य की बात करता है जो सियोन और यरूशलेम से पहले ईश्वर के वचन द्वारा स्थापित किया गया था और दुनिया भर के लोगों को एक ईसाई चर्च में इकट्ठा किया गया था।" फिर इस अगले वाक्य पर ध्यान दें, जो मेरे लिए दिलचस्प है। "अलबामा के ईसाई और ओहियो के ईसाई, एक ने दक्षिणी ग्रे और दूसरे ने उत्तरी नीले रंग की पोशाक पहनी हुई थी, खूनी लड़ाई में एक दूसरे के खिलाफ लड़ रहे थे। फिर भी दोनों मसीह में भाई थे, दोनों उसके शांति के राज्य के सदस्य थे, दोनों अपने सामान्य उद्धारकर्ता में विश्वास चाहते थे, और दोनों शांति के राजकुमार द्वारा उनके लिए प्राप्त शांति का आनंद ले रहे थे

और एक दूसरे के आध्यात्मिक कल्याण के लिए प्रार्थना कर रहे थे। तो वह कहेंगे कि पद 4 उत्तर और दक्षिण के बीच गृह युद्ध के संघर्ष के बीच भी पूरा हुआ था जब विश्वासी एक-दूसरे को मार रहे थे, लेकिन साथ ही मसीह में अपनी एकता और मसीह की शांति का एहसास कर रहे थे जो उन्होंने दिया था उनके दिल। देखिए, यंग वर्तमान स्थिति में उस पूर्ण आध्यात्मिकीकरण से पीछे हट जाता है, और केल्विन की तरह, पूर्ण आध्यात्मिकीकरण को शाश्वत स्थिति में धकेल देता है।

सहस्राब्दी और उत्तर सहस्राब्दी पदों के साथ कठिनाइयों का सारांश

अब, मुझे ऐसा लगता है, हमने सहस्राब्दी के बाद और सहस्राब्दी के विचारों पर ध्यान दिया है। मुझे ऐसा लगता है कि पूर्वसहस्राब्दी दृष्टिकोण इन दोनों स्थितियों की समस्याओं से बचता है। पोस्टमिल को अन्य धर्मग्रंथों से समस्या है जो कहते हैं कि चीजें बदतर और बदतर होती जाती हैं। और आपके पास अभी भी यह समस्या है कि क्या सुसमाचार का प्रसार वास्तव में इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न करेगा। आमिल स्थिति को आगमन स्थिति के बीच में बंद कर दिया गया है और उसे पूर्ति के योग्य होना चाहिए, और कम से कम कुछ अर्थों में एक आलंकारिक पूर्ति देखना चाहिए। मुझे लगता है कि प्रीमिल दृश्य में सबसे कम समस्याएं हैं। यह यरूशलेम को शाब्दिक रूप से ले सकता है, जो विशेष रूप से उसी भविष्यवाणी के मीका संदर्भ में आवश्यक प्रतीत होता है। यरूशलेम को नष्ट किया जाएगा और खेत की तरह जोता जाएगा, परन्तु भविष्य के दिनों में वह उंचा किया जाएगा; और यहोवा का वचन यरूशलेम से निकलेगा, और यहोवा आप ही जाति जाति का न्याय करेगा, और लोग अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल बना देंगे, और फिर युद्ध न होगा। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि पूर्ति के समय तक भविष्यवाणी को एक पूर्व निष्कर्ष तक ले जाने के लिए सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है। अन्य दो विचारों में गंभीर समस्याएँ हैं।

शाब्दिक और आलंकारिक व्याख्या पर

लेकिन मुझे एक और सवाल उठाने दीजिए. यह अभी भी पद 2 में शाब्दिक बनाम आलंकारिक अर्थ के मुद्दे को पूरी तरह से हल नहीं करता है। हमने पिछली तिमाही में शाब्दिक बनाम आलंकारिक के इस पूरे मुद्दे पर चर्चा की थी, और मैंने उस समय कुछ हद तक अमूर्त रूप

से चर्चा करने की कोशिश की थी। मैंने उस समय यह कहने की कोशिश की कि यह एक कठिन समस्या है। मैं किसी सामान्य नियम के बारे में नहीं जानता। यह कहना कि मैं हमेशा किसी चीज़ को शाब्दिक रूप से लेता हूँ, पर्याप्त नहीं है। कभी-कभी चीज़ें स्पष्ट रूप से आलंकारिक होने का इरादा रखती हैं। प्रश्न यह है कि कब किसी चीज़ को आलंकारिक रूप से लेने का इरादा होता है और कब किसी चीज़ को शाब्दिक रूप से लेने का इरादा होता है? यह ऐसी चीज़ है जिससे आपको जूझना होगा। यह कुछ ऐसा है जो व्याख्या की प्रक्रिया में शामिल है।

जब आप यशायाह अध्याय 2, पद 2 पढ़ते हैं, “अन्तिम दिनों में यहोवा के मन्दिर का पर्वत सब पहाड़ों में प्रधान ठहरेगा; वह पहाड़ियों से ऊपर उठाया जाएगा, और सारी जातियां उसकी ओर प्रवाहित होंगी।” वह किस बारे में बात कर रहा है? और आप उस पाठ में शाब्दिक बनाम आलंकारिकता की किस डिग्री लाते हैं? आप देखिए, आमिल अत्यधिक आलंकारिक व्याख्या करेंगे और कहेंगे कि यह केवल चर्च की प्रमुखता के बारे में बात कर रहा है। यह चर्च का प्रतिनिधित्व करने के लिए पुराने नियम के सिव्योन, या यरूशलेम का उपयोग कर रहा है। इसलिये, “यहोवा के मन्दिर का पर्वत सब पहाड़ों में प्रधान ठहरेगा; वह पहाड़ियों से ऊपर उठाया जाएगा, और सारी जातियां उसकी ओर प्रवाहित होंगी।” वे कहते हैं कि यह चर्च के बारे में बात हो रही है।

अन्य लोग कहेंगे: “नहीं, यह चर्च के बारे में बात नहीं कर रहा है। हमें इसे अक्षरशः समझना चाहिए। यह यरूशलेम के बारे में बात कर रहा है, खासकर मीका के संदर्भ के कारण।” लेकिन, यदि आप इसे शाब्दिक रूप से यरूशलेम के संदर्भ के रूप में लेते हैं, तो उस अंतिम वाक्यांश की कुछ भाषा के बारे में क्या, “यह पहाड़ियों से ऊपर उठाया जाएगा, और सभी राष्ट्र इसकी ओर प्रवाहित होंगे।” क्या आप इसे शाब्दिक रूप से लेते हैं? क्या इसका मतलब यह है कि भूवैज्ञानिक उत्थान होगा, और दुनिया का सबसे ऊँचा पर्वत सिव्योन होगा? या यह यह कहने का एक आंकड़ा है कि यरूशलेम, एक शाब्दिक शहर, दुनिया का सबसे प्रमुख शहर बनने जा रहा है। मेरा यह मानना है कि इसे समझने का यही तरीका है। लेकिन वह आलंकारिक है। वह एक आकृति का एक तत्व है। ऐसे लोग भी हैं जो कहते हैं कि श्लोक 2 का उत्तरार्द्ध, “पहाड़ियों से

ऊपर उठाया जाएगा" को भी शाब्दिक रूप से लिया जाना चाहिए, और अंत समय में यरूशलेम की भौगोलिक उन्नति होगी। जे. बार्टन पायने यही विचार रखते हैं।

अब, यदि आप कहते हैं कि आप एक शाब्दिकवादी हैं, तो क्या यह कथन यरूशलेम की प्रमुखता का संकेत है? फिर आप शाब्दिक बनाम आलंकारिक के इस प्रश्न पर वापस आ गए हैं। मुझे लगता है कि हम सभी यह कहना चाहते हैं कि हम शाब्दिक व्याख्या करते हैं। हां, लेकिन अगर आप इसका शाब्दिक अर्थ निकालें तो इसका क्या मतलब है? इसका मतलब यह नहीं कि कहीं कोई आंकड़े नहीं हैं। आपको इस तरह की चीजों से जूझना होगा। वहां तीन विकल्प हैं। आप इस श्लोक के संबंध में अत्यधिक आलंकारिक व्याख्या पर जा सकते हैं और कह सकते हैं कि यह यरूशलेम बिल्कुल नहीं है, यह चर्च है। आप एक प्रकार की संशोधित आलंकारिक समझ में जा सकते हैं और कह सकते हैं कि यह यरूशलेम है, लेकिन यह यरूशलेम की प्रमुखता के बारे में बात कर रहा है। या आप पूरी तरह से शाब्दिक व्याख्या पर जा सकते हैं और कह सकते हैं कि यह यरूशलेम है, और यह भौगोलिक ऊंचाई के बारे में बात कर रहा है।

आप कैसे बताते हैं कि आलंकारिक और शाब्दिक क्या है? आपको अन्यत्र शास्त्रों के उपयोग और परिच्छेद के संदर्भ को देखना होगा। आप देखें कि यह कहाँ जाता है: यह कहता है, "बहुत से लोग आएंगे, और कहेंगे 'आओ, प्रभु के पर्वत पर चलें, वह हमें अपने मार्ग सिखाएगा।'" शेष अनुच्छेद कहता है कि यहां जो प्रमुख है वह यरूशलेम है वह केन्द्र जहाँ से प्रभु शासन करेंगे। तो यह यरूशलेम की प्रमुखता है। लेकिन यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में मुझे नहीं लगता कि आप बिल्कुल निश्चित हो सकते हैं।

जे. बार्टन पायने के अपने उद्धरणों के पृष्ठ 6 को देखें: "ईसा 2:2ए; 4:1 यहोवा के भवन का पर्वत सब टीलोंपर दृढ़ किया जाएगा। स्थलाकृति में इसी तरह के बदलावों की भविष्यवाणी जकर्याह 14:4बी और 10 में की गई है।" ये जकर्याह की भविष्यवाणियाँ हैं, संख्या 70 और 75 जो उसके विश्वकोश में हैं। "इसलिए इस 'सियोन के उत्थान' के लिए उदारवादियों और अन्य रूढ़िवादियों दोनों द्वारा प्रस्तावित विभिन्न रूपक व्याख्याओं के बावजूद, बाइबिल की शिक्षा बाद के दिनों में चमत्कारी भूवैज्ञानिक परिवर्तन, पूर्ति प्रतीत होती है। माउंट मोरिया का मंदिर अपने परिवेश से ऊंचा होने के कारण भौतिक परिवर्तन।" अब वह कहते हैं, "अपने परिवेश से ऊपर

उठा हुआ।" इसमें कहा गया है कि इसे "पहाड़ियों से ऊपर उठाया जाएगा, यहोवा के मन्दिर का पर्वत सब पहाड़ों में प्रधान होगा।" मुझे लगता है कि आप पूछ सकते हैं: किन पर्वतों में प्रमुख? संभवतः, उस क्षेत्र का सबसे ऊँचा पर्वत। कैसा परिवेश? 5 मील, 10 मील, 50 या 100 मील; मुझे नहीं पता।

प्रीमिल पर आपत्ति "अब और युद्ध सीखें" और वन्नॉय की प्रतिक्रिया

एक और प्रश्न जो अक्सर इसकी प्रारंभिक समझ की आलोचना के रूप में पूछा जाता है, वह यशायाह 2:4 में है: "जाति जाति के विरुद्ध तलवार न उठाएगी, और न वे फिर युद्ध सीखेंगे।" वह अंतिम वाक्यांश "वे अब और युद्ध नहीं सीखेंगे," यह किंग जेम्स संस्करण है। एनआईवी का कहना है, "न ही वे अब युद्ध के लिए प्रशिक्षण लेंगे।" जो लोग प्रीमिल स्थिति से असहमत हैं, वे कहते हैं, "आप प्रीमिल संदर्भ में यह कैसे कह सकते हैं कि अब युद्ध नहीं होगा? प्रकाशितवाक्य 20 में सहस्राब्दी स्थिति का मुख्य अंश सहस्राब्दी अवधि के अंत में शैतान की मुक्ति के बारे में बताता है, और एक युद्ध होता है। तो यदि आप यह कहने जा रहे हैं कि यह परिच्छेद सहस्राब्दी काल को संदर्भित करता है, तो क्या यह इस भविष्यवाणी के विपरीत नहीं है कि अब युद्ध नहीं होगा? किंग जेम्स कहते हैं, "अब कोई भी युद्ध नहीं सीखेगा।" एनआईवी, "न ही वे अब युद्ध के लिए प्रशिक्षण लेंगे।" एनएसबी सबसे मजबूत है: "और वे फिर कभी युद्ध नहीं सीखेंगे।" लेकिन इन सभी अनुवादों से पता चलता है कि इस बार शांति स्थापित होने वाली है, और युद्ध हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा। सवाल यह है कि आप इसे प्रीमिल स्थिति के साथ कैसे सामंजस्य बिठाते हैं?

मैं उसी के जवाब में यह सुझाव दूंगा. हिब्रू में, हमारे पास नकारात्मक "लो" + अपूर्ण क्रिया + 'ओड' का यह संयोजन है। निर्गमन 2:3 में उपयोग को देखें: "और जब वह उसे छिपा न सकी।" यह उससे ठीक पहले मूसा के झाड़ियों में छिपे होने के संदर्भ में है। "जब वह उसे छिपा नहीं सकी, तो उसने उसे झाड़ियों में डाल दिया।" लेकिन "जब वह उसे छिपा नहीं सकती थी।" इसमें निरंतरता के अभाव का विचार है. जरूरी नहीं कि यह दोबारा कभी न हो लेकिन निरंतरता की कमी है।

यहोशू 5:1 को देखें: "उनमें अब आत्मा न रही।" यहोशू 5:1 उस विजय के संदर्भ में है जब इज़राइल ने जॉर्डन नदी को पार किया और पानी के चमत्कारी रोक के द्वारा कनान में आया। कनान के निवासी इतने भयभीत थे कि उनमें इस्राएलियों पर जाकर आक्रमण करने की शक्ति नहीं थी। इसीलिए इस्राएली फसह मना सकते थे और उन सभी पुरुषों का खतना कर सकते थे जिनका पहले खतना नहीं हुआ था। "उनमें अब आत्मा भी नहीं रही।" इसका मतलब यह नहीं है कि उनमें फिर कभी इस्राएलियों पर हमला करने की भावना नहीं होगी क्योंकि उन्होंने बाद में ऐसा किया था। लेकिन यह एक समाप्ति थी, आक्रमण करने की उस भावना की निरंतरता की कमी थी। यह फिर कभी नहीं का विचार नहीं है। जोश 5:12: "न तो इस्राएल के बच्चों को फिर मन्ना मिला।"

अब, वहां आप शायद इस पर बहस कर सकते हैं क्योंकि मुझे लगता है कि संदर्भ में मुद्दा यह है कि मन्ना रुक गया है। जब उन्होंने कनान देश में प्रवेश किया तो यह स्थायी रूप से समाप्त हो गया। वे वर्षों से हर दिन मन्ना प्राप्त कर रहे थे। फिर यह बंद हो गया; यह जारी नहीं रहा। तो मुझे ऐसा लगता है कि यह विचार 'एड' ओलम [हमेशा के लिए] नहीं है। यह यशायाह 2:4 के कथन में नहीं है। यह नहीं कहता है कि "फिर कभी युद्ध नहीं होगा," और इस अर्थ में NASB इसका अनुवाद करने में गलत है "वे फिर कभी युद्ध नहीं सीखेंगे।" ऐसा नहीं है कि वे "फिर कभी युद्ध नहीं सीखेंगे", लेकिन निरंतरता की कमी इस "'ओड लो' + 'ओड'" से पता चलती है।

यहोशू 5 को स्पष्ट करने पर प्रश्न: जोर देने की बात यह है कि जब उन्होंने कनान में प्रवेश किया, तो मन्ना बंद हो गया। वे मन्ना द्वारा कायम नहीं रहेंगे। लेकिन दूसरी ओर, यह फिर से शुरू हो सकता है। मुद्दा यह है: यह अभी जारी नहीं है। मुझे लगता है कि यशायाह 2:4 में जिस तरह से इसे कहा गया है उसका यही मतलब है। "वे अब युद्ध नहीं सीखेंगे।" "वे अब युद्ध सीखना जारी नहीं रखेंगे"; मानव इतिहास के पूरे दौर में जो कुछ मौजूद रहा है, उसकी निरंतरता का अभाव होने जा रहा है। इसीलिए यह इतना आकर्षक है। मानव इतिहास में कभी ऐसा समय नहीं रहा जब युद्ध न हुए हों। मानव इतिहास में ऐसा कभी भी समय नहीं होगा जब मसीह के वापस आने तक युद्ध न चल रहे हों। परन्तु जब वह अपना राज्य स्थापन करेगा तब परिवर्तन होगा। उस तरह का माहौल आगे जारी नहीं रहेगा जो हमेशा से मानव अस्तित्व का हिस्सा रहा है, और वह है युद्ध। इसका मतलब यह नहीं है कि एक हजार साल बाद यह फिर से शुरू नहीं हो सकता है, लेकिन

ऐसी कोई चीज़ जारी नहीं रहेगी जो हमेशा से मानवीय स्थिति का हिस्सा रही है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि वह अंतिम वाक्यांश कोई आपत्ति है जो परिच्छेद की प्रारंभिक व्याख्या की वैधता को खारिज करता है जैसा कि कुछ लोगों ने यह तर्क देने की कोशिश की है कि ऐसा होता है।

यंग और केल्विन का कहना है कि यह अब सैद्धांतिक रूप से पूरा हो गया है, और पूर्ण पूर्ति शाश्वत अवस्था में है। इसमें समस्या "अंतिम दिनों में" है। आप कैसे कह सकते हैं कि "अंतिम दिन" शाश्वत स्थिति है? ऐसा प्रतीत होता है कि "अंतिम दिन" इसे मानव इतिहास के प्रवाह की निरंतरता में रखते हैं, शाश्वत स्थिति में नहीं।

एनआईवी ने कहा है, "न ही वे अब युद्ध के लिए प्रशिक्षण लेंगे।" हिब्रू लैमड का शाब्दिक अर्थ है, "सीखना।" ऐसा समय आ रहा है जब युद्ध बिल्कुल अनुचित है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कहती है कि सहस्राब्दी के अंत में फिर से युद्ध होगा। उस समय एक और युद्ध होने वाला है। पोस्टमिल पद बड़े पैमाने पर 1800 के दशक में कायम था और विश्व युद्धों में समाप्त हो गया। हाल ही में, थियोनॉमी आंदोलन के साथ, इसमें एक छोटा सा पुनरुद्धार देखा गया है।

खैर आज के लिए इतना ही काफी है. अगली बार हम इसे वहां से उठा लेंगे.

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा लिखित और रफ संपादित

डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन

डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया